Topic 89 कर्म कारक 6

अधिशीङ्स्थासां कर्म ।

अधिपूर्वाणामेषामाधारः कर्म स्यात् । अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा वैकुण्ठं हरिः ।।

अधिपूर्वक शीङ् स्था तथा आस् धातु का आधार कर्मसंज्ञक हो । अधिशेते वैकुण्ठं हरिः इस उदाहरण में अधिपूर्वक शीङ् स्था और आस् धातुओं के आधार वैकुण्ठ की कर्मसंज्ञा होती है। अतः कर्मणि द्वितीया से अनुक्त कर्म में द्वितीया होती है, हरि वैकुण्ठ पर अधिकार करके सोता है, ठहरता है तथा बैठता है यह उदाहरण - वाक्य का अर्थ है, अर्थात् अधिशयन, अधिस्थान और अध्यासन का वैकुण्ठ कर्म है। वैसे तो ये सभी धातु अकर्मक हैं, पर अधि के उपसर्ग के योग से इनके आधार में सकर्मता का विधान किया गया है। अन्य उदाहरण हैं - शिशुर्मातुः क्रोडमधिशेते, अध्यास्ते, अधितिष्ठति वा । नृपः सिंहासनम् अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा । विष्णुः शेषशय्यामधिशेते । वृद्धा माता पीठिकाम् अध्यास्ते वधूमध्ये परिवारे ।

अभिनिविशश्च ।

अभिनिपूर्वस्य विशतेराधारः कर्म स्यात् । अभिनिविशते सन्मार्गम् (मनः) सत्संगिनः । 'परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्' इति सूत्रादिह मण्डूकप्लुत्या अन्यतरस्यां ग्रहणमनुवर्त्य व्यवस्थितविभाषाश्रयणात् क्वचिन्न । पापेऽभिनिवेशः ।

अभि नि यह संघात (समूह) जिसके पूर्व में हो उस विश् धातु का आधार कर्मसंज्ञक हो । अतः अभिनिविशते इत्यादि पूर्वोक्त

उदाहरण में अभिनिवेश का आधार सन्मार्ग कर्मसंज्ञक हुआ। कर्म में द्वितीया हुई। मन इस क्रिया का कर्ता उपयुक्त प्रतीत होता है। सत्संगी का मन सन्मार्ग में प्रवेश करता है — यह अर्थ होगा। इसी प्रकार सच्छात्राणां चित्तं सदाऽध्ययनमभिनिविशते। योगिनो मनो योगमभिनिविशते इत्यादि जानने चाहिए।
परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम् सूत्र से मेढक के कूदने के साथ अक्रम से अन्यतरस्याम् इस पद की ~~अनुवृत्ति~~ अनुवृत्ति करके व्यवस्थित विभाषा का आश्रय लेने से कहीं पर कर्मसंज्ञा नहीं होती। अतः 'पापेऽभिनिवेशः' इस प्रयोग में अधिकरण में सप्तमी ही होती है। अभिनिवेश का अर्थ संलग्नता है 'एष्वर्थेष्वभिनिविष्टानाम्' यह भाष्यप्रयोग भी इसमें प्रमाण है।

उपान्वध्याङ्वसः।

उपादिपूर्वस्य वसतेराधारः कर्म स्यात्।
उपवसति। अनुवसति। अधिवसति।
आवसति वा वैकुण्ठं हरिः।

उप, अनु, अधि और आङ् पूर्वक वस् धातु का आधार कर्मसंज्ञक हो। उपवसति वैकुण्ठं हरिः। अनुवसति वैकुण्ठं हरिः इत्यादि पृथक्-पृथक् उदाहरण जानने चाहिए। उपवसति - समीप में रहता है। अनुवसति किनारे-किनारे रहता है। अधिवसति अधिकारपूर्वक वास करता है। आवसति - व्याप्त - करके रहता है इत्यादि अर्थ समझना चाहिए।

अनुक्तकर्मणस्य न (वा०)

वने उपवसति।

अभुक्ति (उपवास) अर्थवाले उपपूर्वक वस धातु का आधार कर्मसंज्ञक न हो। अतः वने उपवसति (वन में उपवास करता है) इसमें 'वने' इस आधार में सप्तमी ही होती है।

उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ॥(वा०)

उभयतः कृष्णं गोपाः। सर्वतः कृष्णम्। धिक् कृष्णाऽभक्तम्। उपर्युपरि लोकं हरिः। अध्यधि लोकम्। अधोऽधो लोकम्॥

तस् प्रत्ययांत उभ और सर्व के योग में, धिक् शब्द के योग में तथा आम्रेडित अन्तवाले अर्थात् द्वित्व किये हुए उपरि, अधि और अधः शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। धिक् कृष्णाऽभक्तम जो कृष्ण का भक्त नहीं है, उसे धिक्कार है। यहाँ धिक् के योग में द्वितीया है। तस्य परमाम्रेडितम्। द्विरुक्तस्य परं रूपम् आम्रेडितसंज्ञा स्यात्। दो बार कहे हुए शब्द का पर रूप आम्रेडित संज्ञक हो पाणिनि के इस नियमानुसार।

अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि (वा०)

अभितः कृष्णम्। परितः कृष्णम्। हा! कृष्णाऽभक्तम्। तस्यशोच्यते इत्यर्थः। बुभुक्षितं न प्रतिभाति किंचित्।

अभितः, परितः, समया, निकषा, हा तथा प्रति के योग में भी द्वितीया होती है। अभितः दोनों ओर, परितः सब ओर, समया - समीप

P.T.O

अन्तराऽन्तरेण युक्ते ।
आभ्यां योगे द्वितीया स्यात् । अन्तरा - मध्ये ।
अन्तरा त्वां मां हरिः । अन्तरेण (बिना)
हरिं न सुखम् ।

अन्तरा और अन्तरेण के योग में द्वितीया है। अन्तरा त्वां मां भगवान। अन्तरा त्वां मां सत्यम् । अन्तरा त्वां मां धर्मः